शोध प्रतिवेदन

"बी.एस.टी.सी. प्रशिक्षणार्थियों की समायोजन संबंधी समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन।"

निर्देशक
श्रीमती आरती गुप्ता
(व्याख्याता)

प्रस्तुतकर्त्री
रंजना चौधरी
(एम.एड. छात्रा)

बियानी गर्ल्स बी.एड़ कॉलेज, जयपुर(राजस्थान)
(सत्र 2015-17)

प्रस्तावना :–

शिक्षा मनुष्य के विकास की पूर्णता की अभिव्यक्ति है शिक्षा के द्वारा ही इच्छा शक्ति की धारा पर सार्थक नियंत्रण स्थापित हो सकता है। शिक्षा को शब्द संग्रह अथवा शब्द समूह की स्मृति में न देखकर विभिन्न शक्तियों के विकास के रूप में देखा जाना चाहिए। शिक्षा से ही व्यक्ति सही रूप से चिंतन करना सीखता है। शिक्षा व्यक्तियों का निर्माण करती है, चरित्र को उत्कृष्ट बनाती है, व्यक्ति को संस्कारित करती है, वही सही अर्थ में शिक्षा है। शिक्षा एक साधन है, जो व्यक्ति के आन्तरिक गुणों को प्रखर करती है, उसमें जो अर्न्तनिहित शक्तिया है, उनको विकसित करती है। शिक्षा को परिभाषित करते हुए विवेकानंद ने लिखा कि "शिक्षा व्यक्ति में पूर्ण निहित पूर्णता का प्रकाशन है" शिक्षा के अन्तर्गत हम विभिन्न विषयों का अध्ययन करते है जिससे हमारे ज्ञान का चहुर्मुखी विकास होता है। ऐसा ही एक विषय शिक्षा मनोविज्ञान है जिसके अन्तर्गत व्यक्ति के समायोजन, व्यक्तित्व, बुद्धि, अधिगम, विकास आदि का व्यक्ति की मनोदशा को समझने हेतु अध्ययन किया जाता है।

हमारा जीवन चुनौतियों एवं संघर्षो से परिपूर्ण है। बालकपन से हमें जीवन की विविध समस्याओं का सामना करना पडता है। जो जिस सीमा तक जितने अच्छे ढंग से जीवन संग्राम की इस लडाई को लड़ता जाता है। वह उतने ही अच्छे रूप से सफलता से प्रगति करता रहता है। मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति के अतिरिक्त जीवन में हम बहुत कुछ चाहते है और यही चाह हमें पल–पल संघर्ष करने को प्रेरित करती है। परंतु बहुत बार ऐसा भी होता है कि जो हम चाहते है जिसके लिए हम दिन रात परिश्रम करते है उस उद्देश्य की प्राप्ति हमें नही हो पाती। उदाहरण के लिए एक बालक इंजीनियरिंग कॉलेज में प्रवेश पाने हेतु तरह–तरह की परीक्षा देता है परंतु अथक परिश्रम के बाद भी उसे सफलता नहीं मिलती। इस हालत में वह अपने लक्ष्य को ही परिवर्तित कर देता है तथा बी.एस.सी में प्रवेश लेकर आगे की पढाई में जुट जाता है। एक क्षेत्र में असफलता के बाद दूसरे किसी क्षेत्र का चुनाव करना अपने लक्ष्य की ऊँचाई को अपनी योग्यता और परिस्थितियों के अनुसार घटा देना, इस प्रकार के संशोधित एवं परिवर्तित व्यवहार को ही समायोजन की संज्ञा दी जाती है।

प्रत्येक बालक किसी न किसी सामाजिक वातावरण में रहता है। इस वातावरण से ही उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति होती है। बालक के लिए वातावरण में उपस्थित व्यक्ति और वस्तुएँ समान रूप से महत्वपूर्ण नही होती है। इनमें से कुछ अधिक महत्वपूर्ण होती है, कुछ कम। बालक की इच्छाओं और आवश्यकताओं की पूर्ति कभी सरल ढ़ंग से हो जाती है और कभी उसकी इस प्रकार की पूर्ति में कुछ न कुछ बाधा पड़ती है या समय अधिक लगता है, जब उसकी पूर्ति में समय अधिक लगता है तो उसमें तनाव उत्पन्न हो जाता है, वह कभी क्रोधित होता है, कभी दुखी व कभी निराशा का अनुभव करता है। कुछ दशाओं में और कुछ लोगो के साथ उसे प्रसन्नता और सन्तुष्टि मिलती है, इसके साथ उसका समायोजन होता है। प्रत्येक बालक वर्तमान भविष्य का जीवन सुखी और आनन्ददायक तभी हो सकता है जब उसका व्यवहार समायाजित प्रकार हो। बालक को अनेक लोगों के पास समायोजन स्थापित करना पड़ता है।

समायोजन से सम्बन्धित सर्वाधिक समस्या किशोरावस्था में देखने को मिलती है और इसी अवस्था से बी.एस.टी.सी प्रशिक्षणार्थी भी गुजर रहे होते है। बी.एस.टी.

सी प्रशिक्षणार्थियों में भी कही न कहीं समयोजन सम्बन्धी समस्यायें होती है। इसीलिए शोधकर्त्री द्वारा बी.एस.टी.सी प्रशिक्षणार्थियों की समायोजन सम्बन्धी समस्याओं के लिए इस समस्या का चयन किया गया है।

अध्ययन का औचित्य :–

वर्तमान व भविष्य की आकांक्षाओं के फलस्वरूप शिक्षा का विकास हो रहा है वही नित नवीन समस्याएं उठ खडी हो रही है। इन समस्याओं से निपटने व इनका समुचित हल निकालने के लिए देश के वर्तमान व भावी नागरिकों में उच्च समायोजन का विकास करना अत्यन्त आवश्यक है। समायोजन की समस्या किशोरावस्थामें होती हे। और मेरे अध्ययन का आधार भी 95 प्रतिशत उसी अवस्था से संबंधित बी.एस.टी.सी. प्रशिक्षणार्थी है। क्या बी.एस.टी.सी. प्रशिक्षणार्थियों अपने प्रशिक्षण के साथ स्वयं को समायोजित कर पा रहे और? कितना वो स्वयं को समायोजित पाते है? ग्रामीण व शहरी बी.एस.टी.सी. प्रशिक्षणार्थियों के समायोजन में कितना अन्तर है? यह अन्तर है तो क्यों? इन प्रशिक्षणार्थियों की समायोजन से संबंधित कौन–कौन सी समस्याएं है?

इस समस्या से उभरने वाले प्रश्न निम्न है :

1. बी.एस.टी.सी. प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक समायोजन संबंधी क्या समस्याएं है?
2. बी.एस.टी.सी. प्रशिक्षणार्थियों की सांवेगिक समायोजन संबंधी क्या समस्याएं है?
3. बी.एस.टी.सी. प्रशिक्षणार्थियों की पारिवारिक समायोजन संबंधी क्या समस्याएं है?
4. बी.एस.टी.सी. प्रशिक्षणार्थियों की आर्थिक समायोजन संबंधी क्या समस्याएं है?
5. बी.एस.टी.सी. प्रशिक्षणार्थियों की सामाजिक समायोजन संबंधी क्या समस्याएं है?

इन प्रश्नों से शोध का औचित्य स्पष्ट हो जाता है? इसी कारण शोधकर्त्री द्वारा इस समस्या का चयन किया गया है।

समस्या कथन :–

"बी.एस.टी.सी. प्रशिक्षणार्थियों की समायोजन संबंधी समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन।"

अध्ययन के उद्देश्य :–

इस अध्ययन के उद्देश्य इस प्रकार है -

(1). बी.एस.टी.सी. प्रशिक्षाणार्थियों के शैक्षिक समायोजन संबंधी समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन।

(2). बी.एस.टी.सी. प्रशिक्षार्थियों के सामाजिक समायोजन संबंधी समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन।

(3). बी.एस.टी.सी. प्रशिक्षार्थियों के पारिवारिक समायोजन संबंधी समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन।

(4). बी.एस.टी.सी. प्रशिक्षार्थियों के आर्थिक समायोजन संबंधी समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन।

(5). बी.एस.टी.सी. प्रशिक्षार्थियों के सांवेगिक समायोजन संबंधी समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन।

परिकल्पनाः–

1. .शहरी व ग्रामीण बी.एस.टी.सी. प्रशिक्षणार्थियों के शैक्षिक समायोजन संबंधी समस्याओं में सार्थक अंतर नही है।
2. शहरी व ग्रामीण बी.एस.टी.सी. प्रशिक्षणार्थियों के सामाजिक समायोजन संबंधी समस्याओं में सार्थक अंतर नही है।
3. शहरी व ग्रामीण बी.एस.टी.सी. प्रशिक्षणार्थियों के पारिवारिक सामायोजन संबंधी समस्याओं में सार्थक अंतर नहीं है।
4. शहरी व ग्रामीण बी.एस.टी.सी. प्रशिक्षणार्थियों के आर्थिक समायोजन संबंधी समस्याओं में सार्थक अंतर नही है।
5. शहरी व ग्रामीण बी.एस.टी.सी. प्रशिक्षणार्थियों के सांवेगिक समायोजन से संबंधित समस्याओं में सार्थक अंतर नही है।

शोध के प्रयुक्त तकनीकी शब्दों का परिभाषीकरण :–

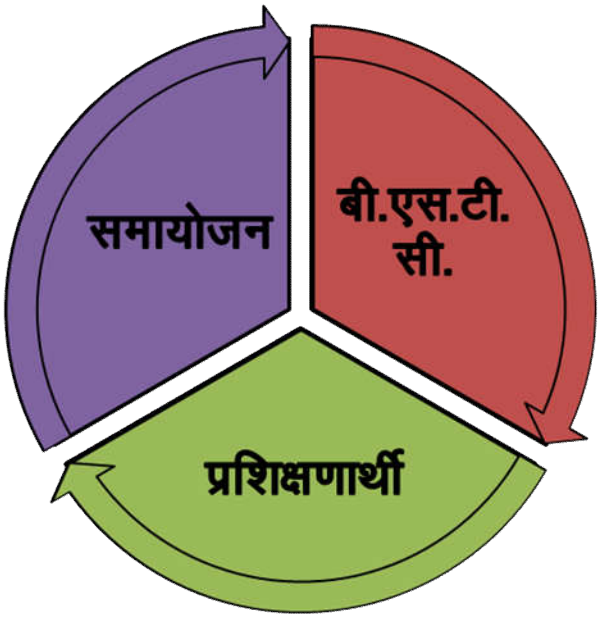

1. बी.एस.टी.सी. :–

कक्षा 1 से 5 तक के बालकों को अध्ययन कराने के लिए जिन शिक्षकों की आवश्यकता होती है। उन्हें इस प्रशिक्षण महाविद्यालय में प्रशिक्षण दिया जाता है। जिसे बेसिक स्कूल ट्रेनिंग कोर्स कहते है।

2. प्रशिक्षणार्थी :–

सन् 1911 में लंदन में रोजगार विभाग द्वारा प्रकाशित प्रशिक्षण के कठिन शब्दों की सूची में Training शब्द को निम्न प्रकार से परिभाषित किया गया।

"किसी दिए गए कार्य को उचित ढंग से सम्पादित करने के लिए किसी व्यक्ति विशेष के दृष्टिकोण, ज्ञान, कौशल एवं व्यवहार के क्रमबद्ध विकास का नाम प्रशिक्षण है।"[1]

प्रशिक्षण से तात्पर्य उस विशेष अभ्यास से है जो किसी विशेष कौशल में प्रवीणता प्राप्त करने के लिए आवश्यक है। इसी प्रकार इस शोध में प्रशिक्षाणार्थी शब्द से तात्पर्य शिक्षण कौशल में दक्षता प्राप्त करने हेतु बी.एस.टी.सी. महाविद्यालयों में प्रशिक्षणरत् छात्र व छात्राओं से है।

3. समायोजन :–

---

[1] *सक्सेना एन आरः "अध्यापक शिक्षा", सूर्या पब्लिकेशन मेरठ 1997 पृ.स. 25*

जीवन में सभी व्यक्तियों को समस्याओं को दूर करने के लिए समायोजन करना पडता है। समायोजन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने जीवन में सुख व सफलता की और अग्रसर होता है।

"समायोजन के शीर्षक के अन्तर्गत हमारा अभिप्राय इन बातों से है सामूहिक क्रियाकलापों में स्वस्थ व उत्साहमय ढंग से भाग लेना, समय पडने पर नेतृत्व का भार उठाने की सीमा तक उत्तरादायित्व वहन करना तथा सबसे बढकर समायोजन में अपने को किसी भी प्रकार का धोखा देने से बचने की कोशिश करना।"

स्किनर

अनुसंधान की विधि :–

प्रस्तुत शोध कार्य की समस्या को भलीभांति समझकर शोधकर्त्री द्वारा अपनी समस्या के समाधान के लिए सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया है।

अध्ययन के चर :–

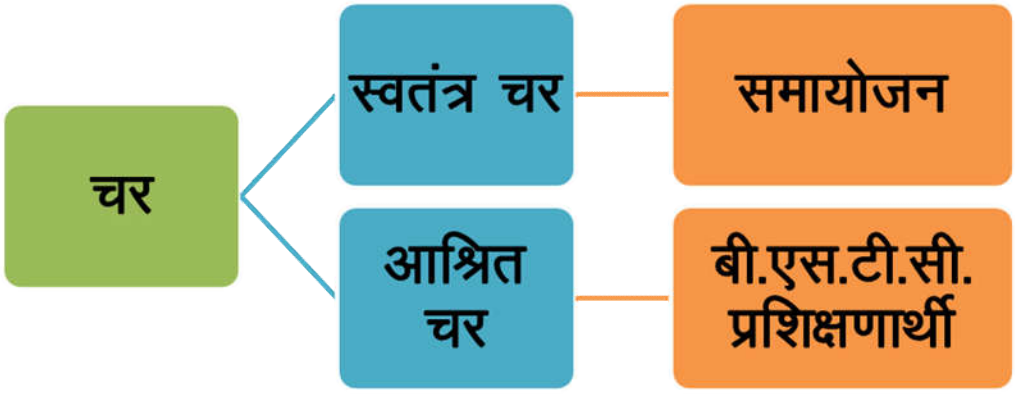

प्रदत्तों के स्त्रोत :–

प्रस्तुत अध्ययन में प्रदत्तों के स्त्रोत के रूप में बी.एस.टी.सी. महाविद्यालयों के प्रशिक्षणार्थी व पुस्तक व पत्र–पत्रिकाओं को शामिल किया गया है।

प्रदत्तों की प्रकृति :–

प्रस्तुत शोध में प्रदत्तों की प्रकृति मात्रात्मक व गुणात्मक प्रकार की है।

परिसीमन :–

- **क्षेत्र** :– प्रस्तुत अध्ययन जयपुर जिले के शहरी व ग्रामीण क्षेत्र में संचालित बी.एस.टी.सी.महाविद्यालयों तक सीमित रखा गया है।

- **लिंग** :– यह अध्ययन छात्र व छात्राओं दोनों पर किया है।
- **प्रशिक्षणार्थी** :– प्रस्तुत अध्ययन में 120 प्रशिक्षणार्थी लिये गये है।

अध्ययन में प्रयुक्त जनसंख्या :–

प्रस्तुत अध्ययन जयपुर जिले के ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के बी.एस.टी.सी. महाविद्यालयों में अध्ययनरत् प्रशिक्षार्थियों पर किया गया है।

अध्ययन में प्रयुक्त न्यादर्शः–

किसी वैज्ञानिक अध्ययन के लिए उस समस्या से सम्बन्धित कुल व्यक्तियों में से प्रतिनिधित्व करने वाले कुछ व्यक्तियों को चुन लिया जाता है, और उनसे प्राप्त होने वाली जानकारी को समस्त समूह के लिए सही माना जाता है तो उन व्यक्तियों को न्यादर्श कहा जाता है।

न्यादर्श के अन्तर्गत यादृच्छिक विधि का प्रयोग करते हुए जिले के 2 बी.एस. टी.सी. महाविद्यालय के 120 प्रशिक्षणार्थियों का चयन किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श का विवरण निम्न प्रकार से है –

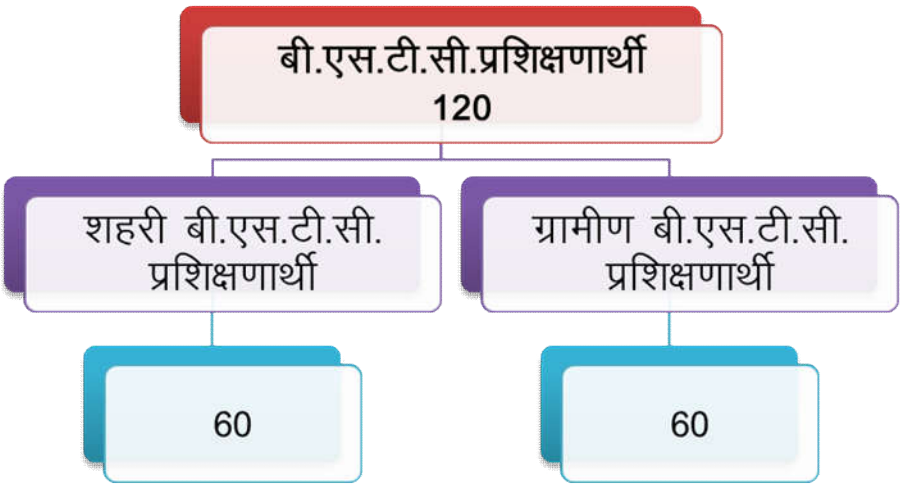

अध्ययन के उपकरण –

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्त्री द्वारा स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी :–

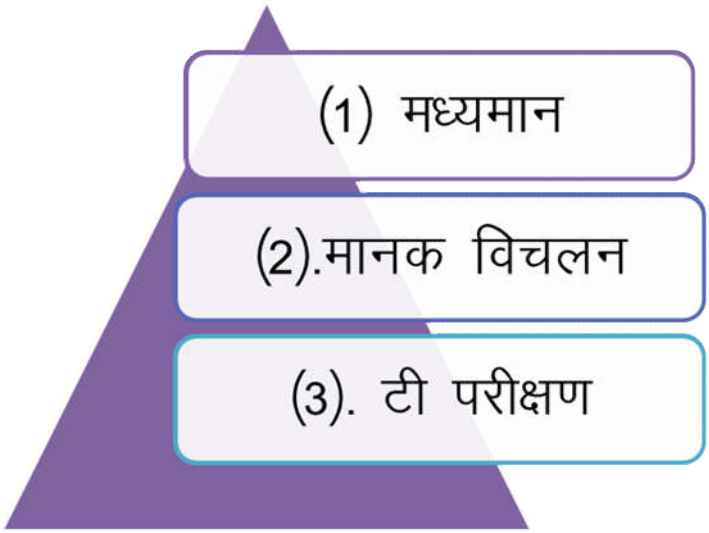

प्रदत्त संचयन एवं विश्लेषण :–

1. शोध द्वारा सर्वप्रथम जयपुर शहर का चयन किया गया जिसमें शोधकर्त्री द्वारा न्यादर्श हेतु 120 बी.एस.टी.सी. प्रशिक्षणार्थियों का चयन किया गया।
2. शोधकर्त्री द्वारा शोध कार्य हेतु उपकरण हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली का निर्माण किया जिसमें 25 कथनों को निर्मित किया गया जो कि समायोजन से सम्बन्धित थे। इस प्रश्न पत्र को प्रशासित करने से पूर्व सभी प्रशिक्षणार्थियो का सामान्य निर्देश दिये गये।
3. सभी प्रशिक्षणार्थियो के सामयोजन पर आधारित प्रश्न पत्र के अनुरूप उत्तर देने के निर्देश दिये गये।
4. तत्पश्चात् समायोजन मापनी का प्रशासन पूर्व नियोजित सूचना व कार्यक्रम के अनुसार किया गया।
5. प्राप्त आंकडो का संकलन कर उसका मध्यमान व प्रामाणिक विचलन ज्ञात किया गया।
6. प्रत्येक पद का विश्लेषण का किया गया।
7. प्रदत्तों का विश्लेषण ग्राफ डायग्राम के आधार पर किया गया।
8. विवेचन के आधार पर निष्कर्ष व परिणाम प्राप्त हुए।

परिकल्पनाओं के आधार पर निष्कर्ष :–

प्रस्तुत अध्याय में शोधकर्त्री ने सांख्यिकी के द्वारा परिणामों का विवेचन व विश्लेषण किया है। सांख्यिकी विश्लेषण के उपरान्त शोधकर्त्री को निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए।

परिकल्पनाओं के आधार पर निष्कर्ष

1 **परिकल्पना I** शहरी व ग्रामीण बी.एस.टी.सी. प्रशिक्षणार्थियों के शैक्षिक समायोजन संबंधी समस्याओं में सार्थक अंतर नहीं है। निष्कर्ष में पाया गया कि शहरी व ग्रामीण बी.एस.टी.सी. प्रशिक्षणार्थियों के शैक्षिक समायोजन संबंधी समस्याओं में कोई अंतर नहीं है। अर्थात् दोनों की समस्याऐं समान है। स्वीकृत होने का कारण हो सकता है कि ग्रामीण व शहरी बी.एस.टी.सी. प्रशिक्षणार्थियों के अभिभावक इनका सही सहयोग करते हो।

2 **परिकल्पना II** "शहरी व ग्रामीण बी.एस.टी.सी. प्रशिक्षणार्थियों के सांवेगिक समायोजन संबंधी समस्याओं में सार्थक अंतर नहीं है।" निष्कर्ष में पाया गया कि शहरी व ग्रामीण बी.एस.टी.सी. प्रशिक्षणार्थियों के सांवेगिक समायोजन संबंधी समस्याओं में कोई अंतर नही है। अर्थात् दोनों की समस्याऐं समान है। स्वीकृत होने का कारण हो सकता है कि शहरी व ग्रामीण बी.एस.टी.सी. प्रशिक्षणार्थियो का समाज के सदस्यो के साथ अच्छा संबंध हो, एवं समूह के लक्ष्यो की उचित समझ के साथ सौहार्दपूर्ण संबंध हो।

3 **परिकल्पना III** "शहरी व ग्रामीण बी.एस.टी.सी. प्रशिक्षणार्थियों के पारिवारिक समायोजन संबंधी समस्याओं में सार्थक अंतर नहीं है।" निष्कर्ष रूप में पाया गया कि शहरी व ग्रामीण बी.एस.टी.सी. प्रशिक्षणार्थियों के पारिवारिक समायोजन संबंधी समस्याओं में कोई अंतर नहीं है। अर्थात् दोनों की समस्याऐं समान है। स्वीकृत होने का कारण हो सकता है कि शहरी व ग्रामीण बी.एस.टी.सी. प्रशिक्षणार्थियो का घरेलू वातावरण उत्तम हो।

4 **परिकल्पना VI** "शहरी व ग्रामीण बी.एस.टी.सी. प्रशिक्षणार्थियों के आर्थिक समायोजन संबंधी समस्याओं में सार्थक अंतर नहीं है।" निष्कर्ष रूप में पाया गया कि शहरी व ग्रामीण बी.एस.टी.सी. प्रशिक्षणार्थियों के आर्थिक समायोजन

संबंधी समस्याओं में कोई अंतर नहीं है। अर्थात् दोनों की समस्याऐं समान है। स्वीकृत होने का कारण हो सकता है कि शहरी व ग्रामीण बी.एस.टी.सी. प्रशिक्षणार्थियों उपलब्ध संसाधनो में उचित आर्थिक कार्य सम्पन्न करते है।

5 **परिकल्पना V** "शहरी व ग्रामीण बी.एस.टी.सी. प्रशिक्षणार्थियों के सामाजिक समायोजन संबंधी समस्याओं में सार्थक अंतर नहीं है।" निष्कर्ष रूप में पाया गया कि शहरी व ग्रामीण बी.एस.टी.सी. प्रशिक्षणार्थियों के सामाजिक समायोजन संबंधी समस्याओं में कोई अंतर नहीं है। अर्थात् दोनों की समस्याऐं समान है। स्वीकृत होने का कारण हो सकता है कि शहरी व ग्रामीण बी.एस.टी.सी प्रशिक्षणार्थियो उचित स्थिति में उचित संवेग व्यक्त करते हो।

शैक्षिक निहितार्थ :–

समाजशास्त्र, मनोविज्ञान, शिक्षाशास्त्र आदि विषयों से सम्बधित शोध प्रयास तब तक अर्थपूर्ण नही होते जब तक कि इनका सम्बन्धित क्षेत्र से प्राप्त निष्कर्षो एवं परिणामों का शैक्षिक निहितार्थ न हो, नही तो शोधकर्त्री द्वारा किया गया शोधकार्य व्यर्थ चला जाता हैं अतः प्रस्तुत शोध के शिक्षा में निम्नलिखित शैक्षिक निहितार्थ होंगे।

पाठ्यपुस्तक निर्माताओं हेतु :–

प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध पाठ्यपुस्तक निर्माताओं को समायोजन संबंधी प्रकरण पुस्तकों में लिखने हेतु प्रेरित कर सकेगा जो कि विद्यार्थियों को सुसमायोजन की ओर अग्रसर कर सकेगा।

शिक्षण संस्थान व प्रबंधन हेतु :–

इस प्रकार के शोध कार्यो से शिक्षण संस्थान इस प्रकार के वातावरण का निर्माण कर सकेंगे जो प्रशिक्षणार्थियों के समायोजन संबंधी समस्याओं को कम कर सके व उनके प्रशिक्षण को सुगम बना सके।

प्रशिक्षणार्थियों हेतु :–

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध प्रशिक्षणार्थियों को समायोजन हेतु प्रेरित कर सकेगा व उनमें समारात्मक दृष्टिकोण का विकास कर सकेगा जिससे प्रशिक्षणार्थी अपना प्रशिक्षण उत्साह पूर्वक कर सकेंगे।

शिक्षा से जुड़े व्यक्तियों हेतु :–

शिक्षा से प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े हुए व्यक्ति महाविद्यालय का शिक्षागत वातावरण इस प्रकार का बना सकेंगे जिससे कि प्रशिक्षणार्थियों में आत्म का विकास हो सकेगा साथ ही समायोजन का गुण विकसित हो सकेगा।

शोध से प्राप्त निष्कर्षो के आधार पर सुझाव :–

शोधकर्त्री द्वारा किये गये शोधकार्य "बी.एस.टी.सी. प्रशिक्षणार्थियों की समायोजन सम्बन्धी समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन" से प्राप्त निष्कर्षो में पाया कि शहरी एवं ग्रामीण बी.एस.टी.सी. प्रशिक्षणार्थियों के समायोजन संबंधी समस्याओं में अंतर नही है। जो समस्याऐं शहरी प्रशिक्षणार्थियों की है वही ग्रामीण प्रशिक्षणार्थियों की है। अतः शोधकर्त्री द्वारा निम्न सुझाव दिये जा सकते है–

1. प्रशिक्षिणार्थियों को समायोजन संबंधी समस्याओं से अवगत करवाया जावे।
2. प्रशिक्षणार्थियों को नवीन शिक्षण विधियों से पढाया जावे ताकि वे शिक्षण में रूचि ले सके।
3. महाविद्यालय में परामर्श सेवायें उपलब्ध करायी जावें।
4. प्रशिक्षणार्थियों में नैतिक भावना का विकास किया जावें।
5. प्रशिक्षणार्थियों को महाविद्यालय में सामाजिकता का पाठ पढाया जावे जिससे उनमें सामाजिक गुणों का विकास हो सके।
6. प्रशिक्षणार्थियों को संवेगों की पहचान हेतु प्रेरित किया जावें।
7. प्रशिक्षणार्थियों को अतिरिक्त आर्थिक भार नहीं दिया जावे।
8. अभिभावकों द्वारा शिक्षा में पर्याप्त सहयोग दिया जावें।
9. परिवार, समाज, महाविद्यालय द्वारा उत्तम शैक्षिक वातावरण का निर्माण किया जावें।
10. प्रशिक्षणार्थियों में नेतृत्व की क्षमता का विकास किया जावें।

शोध से प्राप्त निष्कर्षा के आधार पर सुझाव–

शोधकर्त्री द्वारा किये गये "बी.एस.टी.सी. प्रशिक्षणार्थियो से प्राप्त संबंधी समस्याओ का तुलनात्मक अध्ययन" से प्राप्त निष्कर्षा में प्या कि ग्रामीण व शहरी बी. एस.टी.सी. प्रशिक्षणार्थियो के समायोजन संबंधी समस्याओ में अन्तर नहीं रहा। प्रस्तुतशोधकार्य के अन्तर्गत यह पाया गया कि ग्रामीण व शहरी बी.एस.टी.सी. प्रशिक्षणार्थियो को समयोजित करने हेतु–

– माता–पिता शिक्षक तथा समाज के सदस्यो का यह कर्त्तव्य है कि वे घर विद्यालय तथा समाज में ऐसी परिस्थितियो का निर्माण करे जो बालको के सुसमायोजन में सहायक हो।

गरीब प्रशिक्षणार्थियो को आर्थिक सहायता देना तथा उनके किये गये अच्छे कार्यो पर उन्हें पुरस्कृत करना चाहिए।

सभी स्तरों पर व्यावसायिक शिक्षा हॉबी क्लब की व्यवस्था की जानी चाहिए। समाज में सहयोग व मैत्रीपूर्ण वातावरण का सृजन करना चाहिए।

भावी शोध हेतु सुझाव :–

1. भविष्य में इसे व्यापक करते हुए बडे न्यादर्श का चयन कर इसका विस्तृत अध्ययन किया जा सकता है।
2. भावी अनुसंधान में उच्चतर स्तर के प्रशिक्षणार्थियो के समायोजन संबंधी समस्याओं का अध्ययन किया जा सकता है।
3. भावी अनुसंधान में शहरी व ग्रामीण महाविद्यालय में प्रशिक्षणरत् छात्र व छात्राओं का समायोजन संबंधी समस्याओ का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
4. प्रस्तुत शोध केवल जयपुर जिले के बी.एस.टी.सी. प्रशिक्षणार्थियो पर ही किया गया है अतः इसे अन्य जिलो का लेकर भी किया जा सकता है।
5. यह शोध सरकारी व गैर सरकारी प्रशिक्षक महाविद्यालयो का तुलनात्मक अध्ययन भी किया जा सकता है।
6. प्रस्तुत शोध कार्य जयपुर जिले के महिला/पुरूष प्रशिक्षणार्थी महाविद्यालय पर भी किया जा सकता है।
7. इस शोध कार्य हेतु बी.एस.टी.सी. कॉलेज को लिया गया है। भावी शोध हेतु विद्यालयो के विद्यार्थियो को लिया जा सकता है।
8. शोध कार्य निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है। अनुसंधान के क्षेत्र अधिक विस्तृत है कोई भी शोधकर्त्ता किसी भी शोध समस्या के सभी पक्षो के नही छू सकता है। यद्यपि इस समस्या के क्षेत्र में कुछ शोध हुए है तथापि इसमें कई ऐसे क्षेत्र है जिस पर शोध कार्य सम्पन्न किये जा सकते है ऐसी आशा है।

अतः भविष्य में जो भी इस संबंध हेतु शोधकार्य करे उसके लि कुछ सुझाव निम्नानुसार अपेक्षित है।

उपसंहार –

प्रस्तुत लघु शोध के इस अध्याय में सम्पूर्ण शोधकार्य का निष्कर्ष बताया गया कि हमारी समस्या क्या है कि इसके उद्देश्य विधि उपकरण व सांख्यिकी आदि का संक्षिप्त विवरण दिया गया है भविष्य में होने वाले शोध कार्य के लिए सुझाव प्रस्तुत किये गये है एवं शोध की शैक्षिक उपयोगिता को दर्शाया गया है।